e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 12, December 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.524

Volume 13, Issue 12, December 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1312205|

रूस–यूक्रेन युद्ध के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव

शंकर दास

सहायक आचार्य – राजनीति विज्ञान

श्री डूंगरगढ़ महाविद्यालय, श्री डूंगरगढ़

सारांश

रूस–यूक्रेन युद्ध 21वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक संघर्षों में से एक है, जिसने वैश्विक सैन्य शक्ति, कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर दूरगामी प्रभाव डाला है। यह युद्ध केवल रूस और यूक्रेन के बीच का सैन्य संघर्ष नहीं है, बल्कि इसके पीछे विभिन्न ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक कारक जुड़े हुए हैं। इस शोध–पत्र में युद्ध के मूल कारणों, इसकी प्रकृति और अंतर्राष्ट्रीय प्रभावों का गहन विश्लेषण किया गया है। युद्ध के केंद्र में रूस की सुरक्षा चिंताएँ, नाटो का पूर्व की ओर विस्तार, ऊर्जा संसाधनों पर नियंत्रण और यूक्रेन की संप्रभुता से संबंधित विवाद प्रमुख हैं। इस संघर्ष ने शीत युद्ध के बाद बनी वैश्विक शक्ति–संतुलन की स्थिति को चुनौती दी है और एक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की ओर संकेत किया है। इस शोध में यह विश्लेषण किया गया है कि रूस और पश्चिमी देशों (विशेष रूप से अमेरिका और यूरोपीय संघ) के बीच सैन्य, कूटनीतिक और आर्थिक संघर्ष ने किस प्रकार वैश्विक स्थिरता को प्रभावित किया है। इस शोध में संयुक्त राष्ट्र (UN), नाटो (NATO), यूरोपीय संघ (EU) और अन्य वैश्विक संगठनों की भूमिका का भी विश्लेषण किया गया है। युद्ध के दौरान विभिन्न कूटनीतिक प्रयासों, शांति वार्ताओं और समझौतों के प्रयासों की प्रभावशीलता पर विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त, इस अध्ययन में युद्ध के परिणामस्वरूप वैश्विक सैन्य रणनीतियों में आए बदलावों और भविष्य की सैन्य प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्तियों पर भी चर्चा की गई है।

मूल शब्द – रूस–यूक्रेन युद्ध**,** ड्रोन तकनीक, हाइब्रिड युद्ध, वैश्विक अर्थव्यवस्था

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 12, December 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1312205|

परिचय :

फरवरी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण ने शीतयुद्धोत्तर युग के सबसे गंभीर संकटों में से एक को जन्म दिया। यह युद्ध 2014 के क्रीमिया अधिग्रहण और डोनबास संघर्ष का विस्तार है, लेकिन इसकी तीव्रता और वैश्विक प्रतिक्रियाएं इसे एक ''विश्व युद्ध के बदलते स्वरूप'' की ओर इशारा करती हैं। इस संघर्ष की जड़ें यूक्रेन के पश्चिमी गठजोड़ों (नाटो और EU) की ओर झुकाव, रूस की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं, और यूरेशियाई भू–राजनीति में प्रतिस्पर्धा में निहित हैं। इस युद्ध के आर्थिक प्रभावों की बात करें तो, यह वैश्विक बाजारों में अस्थिरता, ऊर्जा संकट, खाद्यान्न आपूर्ति श्रृंखला में रुकावट और मुद्रास्फीति की दरों में वृद्धि का कारण बना है। विशेष रूप से यूरोप की ऊर्जा आपूर्ति पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा है, क्योंकि रूस प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल का प्रमुख निर्यातक है। पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था पर कई जटिल प्रभाव डाले हैं, जिससे विकासशील देशों को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। युद्ध के सामाजिक और मानवीय प्रभावों पर भी इस शोध में प्रकाश डाला गया है। लाखों लोगों को विस्थापित होना पड़ा, जिससे यूरोप और अन्य क्षेत्रों में शरणार्थी संकट उत्पन्न हुआ। युद्ध ने नागरिकों की सुरक्षा, मानवाधिकारों और मानवीय सहायता मिशनों की भूमिका को एक नई चुनौती दी है। रूस–यूक्रेन युद्ध ने न केवल तत्कालीन राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित किया है, बल्कि इसने आर्थिक और सैन्य रणनीतियों में भी स्थायी परिवर्तन किए हैं। यह युद्ध एक महत्वपूर्ण उदाहरण है कि किस प्रकार एक क्षेत्रीय संघर्ष वैश्विक शक्ति संरचना को हिला सकता है। आर्थिक दृष्टि से, इस युद्ध ने ऊर्जा संकट, व्यापार बाधाओं और वैश्विक मुद्रास्फीति जैसी समस्याओं को जन्म दिया है। सैन्य दृष्टि से, इसने युद्ध तकनीकों में नवाचार, साइबर युद्ध की बढ़ती भूमिका और अंतर्राष्ट्रीय गठबंधनों के पुनर्गठन को प्रोत्साहित किया है।

उद्देश्य :

इस शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है–

- रूस–यूक्रेन युद्ध के सैन्य एवं कूटनीतिक प्रभावों का विश्लेषण करना
- युद्ध के आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन करना
- युद्ध के सामरिक प्रभावों का वर्णन करना
- युद्ध के कारण वैश्विक सैन्य रणनीति में आए बदलावों का अध्ययन करना

Volume 13, Issue 12, December 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1312205|

आंकड़ो के स्रोत व विधि तंत्र :

प्रस्तुत शोध–पत्र द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से तैयार किया गया है। इस हेतु महत्वपूर्ण आंकड़ें रूसी और यूक्रेनी सरकार के दस्तावेज़, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव, NATO और यूरोपीय संघ की प्रेस विज्ञप्तियाँ आदि की सहायता से संकलित किए गए है। इसके अतिरिक्त विभिन्न ऑनलाइन स्रोतो यथा अकादमिक जर्नल्स *International Security, Journal of Strategic Studies* एवं थिंक टैंक रिपोर्ट्स RAND Corporation, Carnegie Endowment, Chatham House की सहायता से भी विषय से संबन्धित महत्त्वपूर्ण आंकड़े प्राप्त किए गए है।

युद्ध का सामरिक परिदृश्य :

रूस–यूक्रेन युद्ध केवल दो देशों के बीच का सैन्य संघर्ष नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति संतुलन, आर्थिक स्थिरता और सुरक्षा रणनीतियों को प्रभावित करने वाला एक निर्णायक घटनाक्रम बन चुका है। यह युद्ध न केवल पूर्वी यूरोप के भू–राजनीतिक परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण साबित हुआ, बल्कि इसने अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और सैन्य रणनीतियों में व्यापक परिवर्तन को भी जन्म दिया है। रूस–यूक्रेन युद्ध 21वीं सदी के सबसे जटिल और प्रभावशाली सैन्य संघर्षों में से एक है, जिसने वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सैन्य रणनीतियों पर व्यापक प्रभाव डाला है। यह युद्ध केवल दो देशों के बीच की लड़ाई नहीं है, बल्कि इसके प्रभाव विश्व स्तर पर महसूस किए गए हैं। इस संघर्ष ने आर्थिक अस्थिरता, ऊर्जा संकट, वैश्विक व्यापार व्यवधान, मुद्रास्फीति में वृद्धि और हथियारों की नई दौड़ को जन्म दिया है। युद्ध के आर्थिक प्रभाव वैश्विक व्यापार और वित्तीय संरचनाओं को गहराई से प्रभावित कर चुके हैं। पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को बाधित किया, जिससे तेल, प्राकृतिक गैस और खाद्य वस्तुओं की कीमतों में भारी वृद्धि हुई। यूरोपीय संघ और अन्य देशों की ऊर्जा निर्भरता में बदलाव आया, जिससे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की ओर रूझान बढ़ा। विकासशील देशों को खाद्यान्न संकट का सामना करना पड़ा, क्योंकि यूक्रेन और रूस प्रमुख गेहूं उत्पादक देश हैं। इसके अलावा, वैश्विक निवेश पर युद्ध का नकारात्मक प्रभाव पड़ा, जिससे आर्थिक मंदी और बेरोजगारी की समस्या बढ़ी।

दूसरी ओर, युद्ध के फलस्वरूप वैश्विक सैन्य रणनीति में बड़े बदलाव देखने को मिले। इस संघर्ष ने सैन्य शक्ति की नई परिभाषा गढ़ी, जहां पारंपरिक युद्ध रणनीतियों के साथ–साथ साइबर युद्ध, ड्रोन युद्ध और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित सैन्य तकनीकों का व्यापक उपयोग हुआ। नाटो (NATO) और यूरोपीय देशों ने अपनी सुरक्षा नीतियों को सुदृढ़ किया, जिससे सैन्य खर्च में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। परमाणु शक्ति के खतरे और हथियारों की होड़ फिर से बढ़ने लगी, जिससे वैश्विक सैन्य संतुलन प्रभावित हुआ।

Volume 13, Issue 12, December 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1312205|

युद्ध के आर्थिक प्रभाव :

रूस–यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक अर्थव्यवस्था पर बहुआयामी प्रभाव डाला है। यह प्रभाव मुख्यतः ऊर्जा संकट, व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला की बाधाएं, वैश्विक मुद्रास्फीति, खाद्यान्न संकट और आर्थिक प्रतिबंधों के रूप में दिखाई दिए हैं।

- **ऊर्जा संकट और मूल्य वृद्धि** – रूस, जो कि दुनिया के प्रमुख तेल और प्राकृतिक गैस निर्यातकों में से एक है, पर पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों ने वैश्विक ऊर्जा बाजार को अस्थिर कर दिया। यूरोप, जो अपनी गैस आपूर्ति के लिए मुख्य रूप से रूस पर निर्भर था, को वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की ओर रुख करना पड़ा, जिससे ऊर्जा बाजार में अस्थिरता बढ़ी और ऊर्जा की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।
- **वैश्विक व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला में बाधा** – यूक्रेन और रूस, दोनों ही कई महत्वपूर्ण वस्तुओं (जैसे गेहूं, सूरजमुखी तेल, उर्वरक और औद्योगिक धातुओं) के प्रमुख निर्यातक हैं। युद्ध के कारण इन उत्पादों की आपूर्ति बाधित हुई, जिससे वैश्विक खाद्य संकट उत्पन्न हुआ और विकासशील देशों में भुखमरी और महंगाई बढ़ी।
- **मुद्रास्फीति और आर्थिक अस्थिरता** – इस युद्ध के परिणामस्वरूप वैश्विक मुद्रास्फीति की दर में तेजी से वृद्धि हुई। विभिन्न देशों की केंद्रीय बैंकों को ब्याज दरें बढ़ानी पड़ीं, जिससे निवेश और आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। युद्ध के कारण कच्चे तेल और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि से महंगाई बढ़ी और सामान्य उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति प्रभावित हुई।
- **रूस पर आर्थिक प्रतिबंध और प्रतिरोध** – पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए कड़े प्रतिबंधों का प्रभाव रूस की अर्थव्यवस्था पर तो पड़ा, लेकिन रूस ने भी प्रतिरोध दिखाते हुए ऊर्जा निर्यात को अन्य एशियाई देशों (विशेषकर चीन और भारत) की ओर मोड़ दिया। इससे वैश्विक व्यापार संरचना में बदलाव देखने को मिला, और पश्चिमी देशों तथा रूस के बीच आर्थिक अलगाव की प्रक्रिया तेज हुई।

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 12, December 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1312205|

सैन्य प्रभाव :

रूस–यूक्रेन युद्ध ने 21वीं सदी के सैन्य रणनीतियों, प्रौद्योगिकी, और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा ढांचे को पुर्न परिभाषित कर दिया है। यह संघर्ष केवल एक ''पारंपरिक युद्ध'' नहीं, बल्कि हाइब्रिड युद्ध (साइबर हमले, सूचना युद्ध, और असममित रणनीतियों का मिश्रण) का प्रतिमान बन गया है। यूक्रेन को पश्चिमी देशों द्वारा प्रदान की गई उन्नत हथियार प्रणालियों (जैसे HIMARS, NASAMS, और लीपर्ड टैंक) ने रूसी सेना की पारंपरिक श्रेष्ठता को चुनौती दी है। इस युद्ध ने ड्रोन तकनीक (बेराकतर TB2, शाहेद ड्रोन) और सैटेलाइट–आधारित खुफिया नेटवर्क की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया है। साथ ही, यह संघर्ष नाटो के पुनर्जागरण, यूरोपीय रक्षा व्यय में अभूतपूर्व वृद्धि, और वैश्विक स्तर पर हथियारों की होड़ को प्रेरित करने वाला कारक बना है। परमाणु प्रतिरोध की रूसी धमकियों ने वैश्विक सुरक्षा को एक नाजुक मोड़ पर ला खड़ा किया है, जिससे सामरिक स्थिरता और निरोध सिद्धांतों पर नए सिरे से बहस शुरू हुई है। रूस–यूक्रेन युद्ध के सैन्य प्रभावों को निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत विश्लेषित किया जा सकता है–

- **नाटो का पुनर्गठन और यूरोपीय सुरक्षा में बदलाव** – फिनलैंड और स्वीडन की नाटो सदस्यता, जर्मनी का €100 बिलियन रक्षा कोष, और पूर्वी यूरोप में अमेरिकी सैन्य अड्डों का विस्तार।
- **हाइब्रिड युद्ध का उदय** – साइबर हमलों (रूस द्वारा यूक्रेन की ऊर्जा ग्रिड पर हमले), सूचना युद्ध (दुष्प्रचार और मीडिया संघर्ष), और नागरिक अवसंरचना को निशाना बनाने की रणनीति।
- **तकनीकी क्रांति का प्रभाव** – यूक्रेन द्वारा स्टारलिंक जैसी निजी कंपनियों की प्रौद्योगिकी का उपयोग, और AI–आधारित लक्ष्य पहचान प्रणालियों की भूमिका।
- **परमाणु खतरे का पुनरुत्थान** – रूस द्वारा टैक्टिकल न्यूक्लियर वेपन्स (TNWs) के इस्तेमाल की धमकी और नाटो की ''न्यूक्लियर शेयरिंग'' नीति में संशोधन।

कूटनीतिक प्रभाव :

रूस–यूक्रेन युद्ध ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को एक ष्नए शीतयुद्धष के दहलीज पर ला खड़ा किया है। यह संघर्ष वैश्विक गठजोड़ों, आर्थिक प्रतिबंधों की प्रभावकारिता, और बहुपक्षवाद की सीमाओं पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है। पश्चिमी देशों ने रूस के विरुद्ध अभूतपूर्व एकजुटता दिखाई। यूरोपीय संघ ने 10 पैकेज प्रतिबंध लगाए, अमेरिका ने रूसी तेल के आयात पर प्रतिबंध लगाया, और SWIFT प्रणाली से प्रमुख रूसी बैंकों को बाहर किया। हालांकि, चीन, भारत, और अफ्रीकी देशों का ''रणनीतिक तटस्थता'' या ''सक्रिय गैर–संरेखण'' इस बात का संकेत है कि वैश्विक दक्षिण (Global South) पश्चिमी एजेंडे से पूरी तरह सहमत नहीं है। इसके अलावा, संयुक्त

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

Impact Factor 8.524

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 12, December 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1312205|

राष्ट्र सुरक्षा परिषद की विफलता (रूस के वीटो के कारण) ने अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के सुधार की मांग को बल दिया है।

युद्ध के फलस्वरूप वैश्विक सैन्य रणनीति में आए बदलाव :

रूस–यूक्रेन युद्ध ने सैन्य रणनीतियों में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। इस संघर्ष ने पारंपरिक सैन्य शक्ति, आधुनिक युद्ध तकनीकों और रणनीतिक गठबंधनों को पुनर्परिभाषित किया है।

- **सैन्य खर्च और हथियारों की दौड़** – नाटो और अन्य पश्चिमी देशों ने अपनी रक्षा नीतियों को सुदृढ़ करने के लिए अपने सैन्य बजट में वृद्धि की। यूरोपीय देशों ने रक्षा उपकरणों की खरीद और सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर अधिक जोर दिया। जर्मनी, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से सैन्य खर्च को नियंत्रित रखा था, उसने भी अपने रक्षा बजट को रिकॉर्ड स्तर पर बढ़ा दिया।
- **साइबर युद्ध और सूचना युद्ध की बढ़ती भूमिका** – इस युद्ध ने दिखाया कि भविष्य के युद्ध केवल भौतिक सीमाओं तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि साइबर हमले और सूचना युद्ध भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। रूस और यूक्रेन के बीच साइबर हमलों का सिलसिला चला, जिससे सरकारी और वित्तीय संस्थानों को भारी क्षति हुई।
- **ड्रोन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित सैन्य तकनीक** – इस युद्ध में ड्रोन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सैन्य उपकरणों का अभूतपूर्व उपयोग हुआ। यूक्रेन द्वारा इस्तेमाल किए गए तुर्की निर्मित ठंलतांजंत ज्ठ2 ड्रोन ने युद्धक्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे यह स्पष्ट हुआ कि भविष्य में छोटे और स्वायत्त हथियार प्रणालियाँ युद्ध की रणनीतियों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगी।
- **नाटो और यूरोप की रक्षा रणनीतियों में बदलाव** –इस युद्ध के परिणामस्वरूप फिनलैंड और स्वीडन जैसे परंपरागत रूप से तटस्थ देशों ने नाटो सदस्यता के लिए आवेदन किया, जिससे यूरोप की सामरिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव हुआ। इससे स्पष्ट हुआ कि रूस के आक्रामक रुख के चलते यूरोपीय देशों को अपनी सुरक्षा रणनीति पर पुनर्विचार करना पड़ा।
- **परमाणु हथियारों का प्रभाव** – इस युद्ध के दौरान रूस द्वारा परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की अप्रत्यक्ष धमकियों ने वैश्विक सुरक्षा पर गहरा प्रभाव डाला। इससे परमाणु हथियारों की नई दौड़ शुरू होने की संभावना बढ़ी, क्योंकि कई देश अपनी सुरक्षा के लिए परमाणु हथियारों के विकास पर जोर दे सकते हैं।

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 12, December 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1312205|

वैश्विक प्रभाव – सैन्य–कूटनीतिक संबंधों की अंतर्क्रिया :

रूस–यूक्रेन युद्ध ने सैन्य और कूटनीतिक कारकों के बीच एक जटिल अंतर्संबंध को उजागर किया है, जिसने वैश्विक शक्ति संरचनाओं, अंतरराष्ट्रीय गठजोड़ों, और भू–आर्थिक नीतियों को गहराई से प्रभावित किया है। यह संघर्ष केवल युद्ध के मैदान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसने ''सैन्य कार्रवाइयों के कूटनीतिक परिणाम'' और ''कूटनीतिक निर्णयों के सैन्य प्रतिध्वनियों'' के बीच एक गतिशील समीकरण बना दिया है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी प्रतिबंधों ने रूस को चीन और ईरान जैसे देशों के साथ नए सैन्य–आर्थिक गठजोड़ बनाने के लिए मजबूर किया, जबकि यूरोप का ऊर्जा संकट नाटो की रणनीतिक प्राथमिकताओं को पुनर्परिभाषित कर रहा है। इसी तरह, यूक्रेन को पश्चिमी हथियारों की आपूर्ति ने न केवल युद्ध का स्वरूप बदला, बल्कि इसने रूस–पश्चिम संबंधों में एक ''प्रॉक्सी युद्ध'' की धारणा को भी सुदृढ़ किया है।

निष्कर्ष :

रूस–यूक्रेन युद्ध ने स्पष्ट कर दिया है कि 21वीं सदी के संघर्षों में सैन्य और कूटनीतिक उपाय अब एक–दूसरे से अलग नहीं हैं। यूक्रेन में HIMARS रॉकेट सिस्टम की तैनाती जितनी सैन्य रणनीति है, उतनी ही कूटनीतिक रणनीति SWIFT प्रतिबंधों की है। इस संघर्ष ने वैश्विक शक्ति संतुलन को एक ''बहु ध्रुवीय मॉडल'' की ओर धकेला है, जहां छोटे देश (जैसे तुर्की या संयुक्त अरब अमीरात) भी सैन्य–कूटनीतिक लीवर के माध्यम से प्रभाव डाल रहे हैं। अंततः, यह शोध–पत्र रूस–यूक्रेन युद्ध के व्यापक प्रभावों को समझने का एक प्रयास है, जो सैन्य शक्ति और कूटनीति के बीच संतुलन स्थापित करने की जटिलताओं को उजागर करता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है कि भविष्य में इस तरह के संघर्षों को रोकने और वैश्विक शांति सुनिश्चित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय तंत्र किस प्रकार कार्य कर सकते हैं।

International Journal of Innovative Research of Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|www.ijirset.com |A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal| e-ISSN: 2319-8753| p-ISSN: 2347-6710|

Volume 13, Issue 12, December 2024

|DOI: 10.15680/IJIRSET.2024.1312205|

References:

1. BBC (2023). *The Grain Deal: Africa's Food Crisis and Geopolitics*.
2. FAO (2023). *Global Food Security Report*.
3. Freedman, L. (2022). *The Future of War: Lessons from Ukraine*.
4. Galeotti, M. (2016). *Hybrid War: The 21st-Century Russian Way of Warfare*. RUSI Journal.
5. IEA (2023). *Europe's Energy Crisis: Pathways to Sustainability*.
6. IMF (2023). *World Economic Outlook: The Impact of Sanctions on Russia*.
7. Kofman, M. (2022). *Russian Military Strategy in Ukraine: Lessons Learned*. CSIS.
8. Mearsheimer, J. (2014). *Why the Ukraine Crisis is the West's Fault*. Foreign Affairs.
9. NATO (2022). *Strategic Concept 2022: Defence and Deterrence*.
10. Putin, V. (2022). *Address on the Annexation of Ukrainian Territories*. Kremlin.ru.
11. SIPRI (2023). *Trends in World Military Expenditure, 2022*.
12. The Economist (2023). *The New Multipolar World: China's Role in the Russia-Ukraine War*.
13. U.S. Department of Treasury (2023). *Sanctions Against Russia: A Comprehensive Overview*.
14. UNHCR (2023). *Ukraine Refugee Response: Regional Data Portal*.
15. Zelenskyy, V. (2023). *Speech at the G7 Summit: "The Price of Freedom"*.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com